

चांद तारे मोहना (२८)

आओ नन्द के कुमार प्राण प्यारे मोहना ।

मेरे जीवन आधार नैन तारे मोहना ॥

कितने दिन से तुम्हें मैं पुकार रही हूं

बहाइ नैनों से नीर की धार रही हूं

मेरे प्राण विकल जिय हारे मोहना ॥१॥

क्यों मुरली की टेर सुनाते नहीं

निज रूप का अमृत पिलाते नहीं

क्यों सेविका को न सम्भारे मोहना ॥२॥

जिस जिस ने पुकारा वहां आये हो तुम

किस दोष से मुझको भुलाए हो तुम

डूबती नैया को क्यों न उबारे मोहना ॥३॥

शरद पूर्णिमा में तुमनें रची रास बिहारी

सुन मुरली को आई सारी गोप कुमारी

रुक गए गगन चांद तारे मोहना ॥४॥

गोपी वेष धरे भोला नाथ आयो
युगल चरणनि में अपना शीश निवायो
मिले मैगसि को सुख सारे मोहना ॥५॥